P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-VIII* April-2016

मुगलकालीन पर्यावरण चेतना

एस0एन0 वर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
सेवापुरी, वाराणसी, उ0प्र0

सारांश

पर्यावरण चेतना एक नवीन अवधारणा है। पर्यावरण के विनाश एवं इससे उत्पन्न उत्तरजीविता के आसन्न खतरे के सापेक्ष पर्यावरण संरक्षण की मूल धारणा का विकास हाल के वर्षों में हुआ है जिससे पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन का प्रचलन बढ़ा है। इसी के साथ अतीत के संरक्षण उपायों को सामने लाने की कोशिश की जा रही है। इतिहास का ज्ञान मानव चेतना को सम्बल प्रदान करने के साथ जन–आन्दोलन को मजबूत बनाता है। अशोक के अभिलेखों से लेकर आधुनिक पर्यावरण कानूनों के पारित होने में एक नवीन ऊर्जा की खोज की जा सकती है। इस आलेख में मुगल कालीन समाज में प्रकृति प्रेम और पर्यावरण चित्रण का प्रयास किया गया है। बाबर के बाबरनामा, जहाँगीर के तुजुक–ए–जहाँगीरी में प्रकृति का जिस मात्रा में चित्रण है वह अप्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण सन्तुलन का संकेत देता है। मुगल शासक निशात बाग, काबुलीबाग, शालीमारबाग, पिंजोरबाग आदि का निर्माण फारसी शैली में कराते है जिसमें भव्यता के साथ भारतीय वन्य जीवन और वनस्पति का निरूपण है। मनसबदार, जागीरदार आदि अधीनस्थ शासक वर्ग ने बाबली, जलाशय बगीचों का निर्माण कर अपने क्षेत्र में प्राकृतिक संतुलन बनाए रखा। मुगल शासक अकबर ने जानवरों की हत्या कर रोक लगाई। विदेशी यात्री जो यूरोप से आए, उनके यात्रा–विवरण प्रदूषण और संरक्षण की दशा का उल्लेख करते है। पर्यावरण की रक्षा के लिए विभिन्न प्रयासों एवं चेतना स्तर को पहचानने की कोशिश इस लेख में की गई है।

मुख्य शब्द : पारिस्थितिकी, मनसबदार, जागीरदार, यात्रा विवरण, मुलशी सत्याग्रह, कमरधा।

प्रस्तावना

पर्यावरण का इतिहास, समाज और प्रकृति के सम्बन्धों का अध्ययन है। पृथ्वी पर जीवन के उद्‌गम के समय से ही पर्यावरणीय परिवर्तन होते रहे है। इन पारिस्थितिकीय परिवर्तनों के सकारात्मक परिणाम स्वरूप कृषि क्रान्ति की शुरूआत हुयी। प्राचीन नागरिक बस्तियां बनी, जिनकी ध्वसं भूमि पर आधुनिक नगरीय केन्द्रों का विकास हुआ। पारिस्थतिकीय परिवर्तनों का एक नकारात्मक पक्ष भी रहा। हड़प्पा और मिश्र जैसी शानदार सभ्यताएं नष्ट हो गई। ऐतिहासिक काल में इन परिवर्तनों की दिशा और दायरा विशाल रूप ले लिया। 20वीं शताब्दी तक चिन्ताजनक रूप धारण कर चुका पर्यावरण अर्न्तराष्ट्रीय सरोकार रखने लगा। पृथ्वी को विज्ञान की भाषा में 'सेल' कहा जाता है। विकसित और विकासशील देश पर्यावरण के मुद्दे पर विभाजित हो गए। औद्योगीकरण, जनसंख्या, नदी बांध, गैसीय उत्सर्जन, वनों के कटाव, तीव्र नगरीकरण से उत्पन्न संकट पर्यावरणीय समझौते की विवशता उत्पन्न करने लगा।

पारिस्थितिक सन्तुलन और मनुष्य के प्रकृति के साथ नाजुक सम्बन्धों की पारम्परिक ज्ञान प्रणाली में अच्छी समझ थी इसलिए प्राचीन ग्रन्थों में प्रकृति को उचित महत्व दिया गया और वृक्षारोपण को वृक्ष संरक्षण को सामाजिक परम्पराओं का हिस्सा बनाया गया। नीम के पेड़ की पूजा, पीपल, तुलसी की पूजा कुऑ विवाह व पूजन आदि इसके उदाहरण है। मध्यकाल में भी यह सन्तुलन वैयक्तिक स्तर पर चलता रहा इसका कारण यह था कि तुर्क दूसरी भौगोलिक परिस्थिति से आए थे। मुगल काल में स्थानीय चेतना ग्रहण करने के कारण शासक वर्ग ने शासकीय और सामाजिक स्तर पर पर्यावरण जागरूकता पैदा की। उनके इस सोच के पीछे ईरान की समृद्ध परम्पराएं विद्यमान थी। आजादी के बाद पर्यावरण से जुड़े टकराव नए रूप में सामने आने लगे। भोपाल गैस त्रासदी, नर्मदा बचाओ, चिपको अप्पिको आन्दोलन से लोकतंत्र को एक नया आयाम मिला इसे यदि 1921 के टाटा ग्रुप द्वारा सहयाद्रि पहाड़ी पर बाध बनाने के विरोध में उत्पन्न मुलशी सत्याग्रह से जोड़कर देखा जाय तो भारत का पर्यावरण आन्दोलन विश्व को नई राह दिखाता हुआ प्रतीत होगा। विकसित देशों

में यह मान्यता है कि पर्यावरण सौन्दर्यबोध का प्रश्न है जबकि भारत जैसे देश में यह गरीबों के जीवन का प्रश्न है। अमेरिका जैसे देश में पर्यावरण आन्दोलन उपभोक्ता के साथ–साथ चलता है वहां सामाजिक और पारिस्थितिकीय आधार पर सवाल नहीं उठाया जाता। जबकि गरीब देशों में यह रोजी–रोटी जुटाने तथा अस्तित्व के सवालों से जुड़ गया है। यह कहना उपयुक्त है कि पर्यावरण आन्दोलन अत्यन्त नाजुक दौर में पहुँच गया है। पर्यावरण प्रबन्धन के तकनीकी वैज्ञानिक और नैतिक पक्ष अत्यन्त जटिल है लेकिन किसी भी देश के हितों की मूल प्रकृति जटिल नहीं है। विकास की पश्चिमी अवधारणा को प्रश्नांकित करने का अवसर प्राप्त हुआ है साथ ही अपने देशीय उपायो के चिन्तन का भी। इतिहास की ताकत यह बात स्पष्ट करती है कि इतिहास–ज्ञान चेतना को ऊर्जा देता है पर्यावरणीय इतिहास की पृष्ठभूमि तैयार दिखती है।

भारतीय इतिहास के मुगल काल में पर्यावरण चेतना की खोज और उपलब्धि इस आलेख का निष्कर्ष है। पर्यावरण की चिन्ता और इसके लिए संलग्न प्रवृत्ति के दो पहलू है जिसे आधार माना जाता है। इन्हीं आधारों पर पर्यावरण चेतना को वर्णित किया जाना है। शासक वर्ग के आत्म कथात्मक विवरण, उद्यानों की स्थापना तथा विदेशी यात्रियों के विवरण के माध्यम से इस चेतना को स्पष्ट किया जा सकता है।

जिन मुगल शासकों ने भारत के बारे में लिखा है उनमें बाबर और जहॉगीर के नाम महत्वपूर्ण है। इन आत्म–विवरणों को इसलिए प्रशंसा मिली क्योंकि उनमें साहित्यिक कौशल के साथ लेखकीय औदार्य और सत्यनिष्ठा का प्रदर्शन है। बाबर का विवरण प्राकृतिक इतिहास का अद्भुत उदाहरण है। वह भारत की विशालता और अद्भुत भू–आकृति के बारे में लिखता है कि 'हिन्दुस्तान एक विशाल देश है जो जन और धन से भरा है। इसके दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में विशाल सागर है। इसके पहाड़ नदियां, जंगल मरूस्थल और शहर हमारे देश से अलग है जैसे ही हम सिन्धु नदी पार करते है एक अलग भूमि, पानी, पेड़, पत्थर लोग परम्पराएं और विचार दिखायी पड़ने लगते हैं।' वह एक स्कूल में विद्यार्थी की तरह भारत की सीमाओं की व्याख्या करता है कि हिन्दुकुश, काबुल से आरम्भ होकर भारत की पश्चिमी सीमा थोड़ा मुड़कर दक्षिण तक फैली है। उत्तर में तिब्बत है। शिवालिक की व्याख्या करते हुए वह कहता है कि हिन्दू इसे सवालाख के रूपक के रूप में जानते हैं। ए सवा लाख चोटियां हमेशा बर्फ से ढकी रहती है। इन्हें लाहौर सरहिन्द ओर सम्भल से देखा जा सकता है। वह उत्तर भारत में अधिकांश नदियों और नालों का उल्लेख करता है। मौसम के बारे में वह लिखता है कि 'मध्य एशिया में 4 ऋतुएं होती हैं जबकि भारत में केवल 3 ऋतुएं होती हैं। वर्षा ऋतु में हवा सुन्दर हो जाती है, नदियां जल से भर जाती है। आर्द्रता का असर धनुष तरकश कपड़ों और पुस्तकों पर पड़ता है। गरमी में पश्चिमोत्तर क्षेत्र में बालू भरी आधियां और लू चलती है। उसके लिए भारत एक सुन्दर बगीचे के समान था जहाँ बहुरंगे फूल अपनी मधुर सुगन्ध वर्ष भर फैलाते रहते थे। उसने 'आम' का सबसे अच्छा फल बताया। हाथी, भालू, गैंडा देखकर वह इतना लालायित होता था कि अपनी जान की परवाह किए बिना उनके पीछे भाग जाता था।' बाबर के इस विवरण से प्राकृतिक समृद्धि का पता चलता है। जहाँगीर ने बाबर के अनुसरण पर आत्म विवरण लिखा है। प्रथम 12 वर्ष का विवरण उन्होंने स्वयं लिखा है जबकि वाद का विवरण मोतमिद खान ने लिखा। तुजुक–ए जहॉगीरी में भारत की आर्थिक समृद्धि का वर्णन है। लोगों की भौतिक समृद्धि का उल्लेख करने के साथ आपदा और अकाल से उत्पन्न कठिनाइयों का भी विवरण इस पुस्तक में मिलता है। जहॉगीर भारत की वनस्पति और वन जीवों की विविधता से अत्यन्त प्रभावित थे। उन्होंने कश्मीर की वनस्पति का चित्रण के लिए मंसूर को नियुक्त किया था यह कार्य मंसूर द्वारा अत्यन्त सावधानी से किया गया। पक्षियों के सूक्ष्म चित्र का उदाहरण बिना लौकिक ज्ञान के प्रस्तुत नहीं किया जा सकता था। अलीगढ़ मुस्लिम वि0वि0 अलीगढ़ में संरक्षित उसकी चित्रकलात्मक कृतियों से विशद जानकारी मिलती है। भक्ति कालीन सन्तों की लेखनी से प्रकृति चित्रण यह संकेत करता है कि जनमानस में प्रकृति–प्रेम की चेतना थी, भले ही पर्यावरण संरक्षण के सन्दर्भ में उसका उल्लेख नहीं मिलता है। सूर, जायसी कुतुबन, मंझन, तुलसी आदि का प्रकृति वर्णन इसका प्रमाण है।

अकबर ने अपने सौतेले भाई हकीम मिर्जा के साथ संघर्ष किया था। अकबरनामा के विवरण के अनुसार मिर्जा ने 'कमरघा' युद्ध का सहारा लिया था और जानवरों को सेना के अग्रभाग में नियोजित कर दिया था जिससे अकबर बचाव की मुद्रा में आया उसने जानवरों की हत्या नहीं की। अकबर की धार्मिक नीति के आलोचक बदायूँनी ने तीन पापों का उल्लेख किया है। छायादार वृक्ष की कटाई को वह पहला पाप मानता था। जानवरों की हत्या आदमियों का क्रय–विक्रय अन्य पाप थे। बदायूँनी के अनुसार ईश्वर उस व्यक्ति को पसन्द नहीं करता जो गाय को मारता है, पेड़ काटता है और मानव व्यापार करता है। वह उन मुस्लिमों का मजाक उड़ाता है जो यह समझते हैं कि बिना मांस खाए धर्म पक्का नहीं होता है।

मुगल शासकों द्वारा निर्मित 'बाग' भी स्थापत्य कला के साथ पर्यावरण के संरक्षण का संकेत देते है मुगल कालीन बगीचों की शैली ईरान शैली से प्रभावित है। पूल झरना और नहर इसकी प्रमुख विशेषताएं है। बाबर ने चारबाग को अपनी प्रिय वस्तु बताया। यह चारबाग शैली भारत में नया रूप धारण कर ली क्योंकि यहाँ तेजी से बहने वाले जल स्रोत नहीं थे। आगरा का 'राम बाग' इसका पहला उदाहरण था। भारत बांग्लादेश और पाकिस्तान में मुगलों द्वारा निर्मित अनेक बाग है जो ज्यामितीय दृष्टि से ईरान से अलग है शालीमार गार्डेन, लाहौर, लालबाग किला (ढाका) और शालीमार बाग (श्रीनगर) मुगलों द्वारा स्थापित अन्य बगीचे है। प्रारम्भ में शासक समय बिताने के लिए बाग को निर्माण कराते थे उनके द्वारा निर्मित बाग नदी के किनारे होते थे। जहॉगीर की कश्मीर यात्राओं ने प्रकृति और वानस्पतिक चित्रों के प्रति लगाव को प्रेरणा दी। शाहजहॉ द्वारा निर्मित ताजमहल (आगरा) और महताबबाग (दिल्ली) उद्यान कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। महताबबाग को नाइट गार्डेन कहा जाता था जो चमेली के फूलों से सुगन्धित रहता

था। चन्द्रमा की रोशनी को परावर्तित करने वाले सफेद संगमरमर लगे हुए थे। लगभग सभी बागों में बहता हुआ पानी और एक तालाब होता था जो बाग के सौन्दर्य को बढ़ाता था, विभिन्न प्रकार के पेड़ फलदार और छायादार रंगीन और सुगन्धित घास, पक्षियों से लदे पेड़ एक सुखद चित्र बनाते थे कभी–कभी बीच मे पर्वत के आकार वाला ऊँचा टीला बनाया जाता था। इस प्रकार बगीचे शासकीय प्रयास का उदाहरण प्रस्तुत करते ह। अधीनस्थ अधिकारियों और मनसबदारों की भूमिका इसमें महत्वपूर्ण थी अब्दुर्रहीम खान खाना ने बुरहानपुर तथा अहमदाबाद में बगीचा लगवाया था। जयपुर के राजा मिर्जा जयसिंह के प्रकृति–प्रेम की कथा बहुश्रुत है। पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित बावली, जलाशय आज भी यंत्र–तंत्र दिखाई पड़ते है जो मुगलकालीन पर्यावरण चेतना के स्मारक है।

मुगलकाल में यूरोप में अनेक यात्री भारत आए। उनके यात्रा विवरणों में विभिन्न शहरों के पर्यावरण के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। इन विवरणों से यह सहज निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उस समय भी पर्यावरण के प्रति चेतना थी। फादर एंथोनी मांसरेट अकबर के शासन काल में भारत आए थे उन्होंने सूरत माण्डू सिरोज, नरवर ग्वालियर, दिल्ली, सोनीपत सरहिन्द, और लाहौर का वर्णन किया है वे लिखते है कि 'भारत के नगर दूर से देखने पर बड़े सुहावने लगते है लेकिन अन्दर से संकरे और बेतरतीब नजर आते है। लाहौर शहर में इतने लोग रहते है कि इधर से उधर निकलने पर शरीर एक दूसरे से रगड़ जाते हैं। किले में एक ऊंची बाजार है जिसे धूप और पानी से बचाने के लिए लकड़ी की ऊंची छत बनायी गई है।' राल्फ फिंच ने खम्भात का वर्णन हुए लिखा है कि यह एक घनी आबादी वाला शहर था इस शहर में पक्षियों जानवरों के लिए अनेक अस्पताल थे। आगरा बनारस व पटना के बारे में वह सविस्तार लिखता है। विलियम हॉकिन्स ने हाथी और घोड़ों को विभिन्न प्रजातियों का उल्लेख किया है। विलियम फिंच ने फतेहपुर सीकरी का वर्णन करते हुए लिखा है कि यहॉ अनेक भवन है जिनमें कोई नहीं रहता है, परती भूमि को बाग बगीचों में बदल दिया गया है वहॉ खड़ा व्यक्ति यह महसूस नहीं कर पाएगा कि वह शहर के बीच खड़ा है। जहॉगीर के समय भारत आने वाले निकोलस विथिगंटन ने लिखा है कि अहमदाबाद लंदन के समान था। अजमेर जैसा शहर

निष्कर्ष

निष्कर्ष स्वरूप यह कहा गया हैं कि हमारी प्राचीन सांस्कृतिक चेतना को नया आयाम पर्यावरण के सम्बन्ध में मुग़ल काल में मिला।अतः एक निरंतर चेतना के उदाहरण है।हमें समग्र दृष्टि अपनाकर पर्यावरण सरक्षण की कोशिश करनी चाहिए। उसने पहले नहीं रेखा था। एडवर्ड टेरी ने प्रजातियों की विविधता बताते हुए फलों का उल्लेख किया है। ट्रेवेनियर ने एक लम्बा समय भारत में व्यतीत किया था। वह एक व्यापारी था इसलिए उसके द्वारा गरम मसालों, जहरमोहड़ा स्टोन (मणि), कस्तूर, नील, हाथी दाँत आदि का विवरण पर्यावरण के इतिहास के लिए अत्यधिक उपयोगी हो सकता है। एक अन्य फ्रांसीसी यात्री वर्नियर ने आगरा और दिल्ली का विवरण दिया है उसके अनुसार इन शहरों की इमारतें अत्यन्त सुन्दर थी। दिल्ली के आस–पास का क्षेत्र उपजाऊ था। डच फैक्ट्री के उत्पादन और शहरों के यातायात के बारे में जैसा विवरण मिलता है उससे पर्यावरण चेतना का सहज नमूना प्राप्त होता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि मुगल काल में पर्यावरण के प्रति एक चेतना थी, इसके दो रूप थे एक ओर शासकीय प्रयास थे तो दूसरी ओर पर्यावरण से जुड़ाव रखने वाली संस्कृति थी। प्राचीन संस्कृति में मुगल संस्कृति अवरोध नहीं उत्पन्न करती है। आम जनता के बीच संस्कारवद्ध पर्यावरण चेतना थी तो शासकों के पास सौन्दर्यबोध वाली चेतना। नगरीकरण, जनसंख्या वृद्धि, गैसीय उत्सर्जन खाद्य चक्र आदि की बारीक समझ न दिखने के बावजूद मुगल काल में पर्यावरण चेतना थी। दुनिया का दूसरा देश इस आधार पर मुकाबले में कहीं नहीं ठहरता है। जरूरत बात है कि आधुनिक सन्दर्भों में इस चेतना का उपयोग किया जाय।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. जान लीडन और इरस्किर का फारसी संस्करण से अनुवाद नई दिल्ली।
2. ए.एस. वैवरिज का तुर्की संस्करण से अनुवाद, नई दिल्ली 1970
3. कांसटेन्स विलर स्टुअर्ट की पुस्तक – द गार्डेन्स ऑफ मुगल्स
4. आई0एच0 सिद्दीकी, सम्पादित, मेडीबल इण्डिया।
5. एफ0 वर्नियर–ट्रेवेल्स इन द मुगल इम्पायर नई दिल्ली 1971
6. बेनी प्रसाद– हिस्ट्री ऑफ जहॉगीर, इलाहाबाद।
7. गुहा,रामचंद्रः एनविराइन्मेंटल मूवमेंट इन इंडिया–लोंगमन् 2007– 8 इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के स्टडी मटेरिअल–हिस्ट्री ऑफ़ इकोलॉजी एंड एनवायरनमेंट इन इंडिया।

Dear Author,
Please Provide us Aim of the Study (उद्देश्य) & Conclusion for this paper.